B.A.-I (Hons)

Paper - I

Unit - I Topic

प्रयोगात्मक विधि के गुण —

Merits of Experimental Method

(I) प्रयोगात्मक विधि में प्राणी या जीव के व्यवहारों एवं मानसिक प्रक्रियाओं से सम्बद्ध चरों का अध्ययन एक नियंत्रित अवस्था में की जाती है। परिणामस्वरूप, इससे प्राप्त निष्कर्ष की आन्तरिक वैधता काफी अधिक होती है। अपने इसी गुण के कारण प्रयोगात्मक विधि अन्य विधियों से भिन्न है क्योंकि इतना अधिक नियंत्रित परिस्थिति दूसरी विधि में नहीं मिल पाती है। एटकिन्सन, एटकिन्सन तथा हिलगार्ड (1983) ने ठीक ही कहा है, "चरों पर सख्त नियंत्रण करने की क्षमता ही प्रयोगात्मक विधि को प्रेक्षण के अन्य विधियों से अलग करता है।"

(II) प्रयोगात्मक विधि में पुनरावृत्ति का गुण होता है। एक प्रयोगकर्ता स्पष्ट रूप से अपने रिपोर्ट में यह लिखता है कि उसका प्रयोगात्मक डिजाइन क्या था, उसमें प्रयोज्य की संख्या क्या थी, उसने स्वतंत्र चर में जोड़-तोड़ कैसे किया, आदि-आदि। यदि किसी दूसरे अध्ययनकर्ता को पहले अध्ययनकर्ता द्वारा प्राप्त निष्कर्ष पर किसी प्रकार की शंका है तो दोहराकर निष्कर्ष की जाँच आसानी से कर ले सकता है। इस ढंग की सुविधा दूसरी विधि में नहीं है।

(III) प्रयोगात्मक विधि काफी वस्तुनिष्ठ होती है क्योंकि इसमें प्रयोगकर्ता को एक खास ढंग से एवं खास विधि से प्रयोग करना होता है। चाहकर भी वह किसी प्रकार का पक्षपात या पूर्वाग्रह आदि नहीं कर पाता है। चूँकि विधि वस्तुनिष्ठ होती है, अतः इससे प्राप्त आँकड़ों का गुणात्मक तथा परिमाणात्मक विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है।

(IV) प्रयोगात्मक विधि में स्वतंत्र चरों का जोड़-तोड़ काफी अधिक एवं उचित ढंग से हो पाता है। फलस्वरूप प्रयोगकर्ता किसी मनोवैज्ञानिक समस्या का अध्ययन कई तरह से कर सकने में समर्थ होते हैं।